

## दिव्य भाव

भगवान् श्रीरामचन्द्र की आल्हादिनीशक्ति श्री श्रीजू की जन्मभूमि भी परम आल्हादमयी है । वहाँ की कोमलभूमि शीशे के भाँति स्वच्छ, विशाल सरोवर, फलों से लदे हुए आम और लीची के बगीचे रंग-बिरंगे युगलसरकार के नामों का उच्चारण करके चहकने वाले पक्षी, वहाँ के सरल और कोमल प्रकृति के भोले-भाले निवासी सबके-सब मनोहर हैं । श्रीस्वामी कोकिलजी का हृदय विदेह-नगरी के दर्शन से अत्यन्त प्रफुल्लित हो गया । वे वहाँ स्नान, दर्शन, ध्यान, स्मरण, विचरण आदि का आनन्द लेते रहे । जबवे श्रीसीतामढ़ी में निवास कर रहे थे तो एक बड़ा ही आनन्दप्रद अनुभव हुआ । श्रीस्वामीजी मन्दिर में दर्शन करने गये । दर्शन करने के पश्चात् उन्हें ऐसा दीखने लगा कि विदेहराज श्रीजनक और माता श्रीसुनयनाजी गोद में अपनी ललित-लड़ैती लाड़िली पुत्री को लेकर यज्ञभूमि से लौट रहीं हैं । गोद में सद्योजाता भूमिनन्दिनी हैं । हैं ! यह क्या !! वर्षा होने लगी ! महारानी सुनयना और महाराज श्रीजनक नन्हीं-सी शिशुमूर्ति को गोद में लिये एक अजानिवास में प्रवेश कर गये । यज्ञ समागत ऋषि-महर्षि, प्रजा-परिजन की भीड़ आ जाने से दोनों महल में आ गये । सब लोग दर्शन के लिये अत्यन्त उत्सुक हो गये । माता श्रीसुनयना अपनी गोद में श्रीभूमिनन्दिनी को छिपाये हुये हैं कि इस शिरीषकुसुम-सुकुमार सद्योजाता शिशु को कहीं किसी की नज़र न

लग जाय । वे किसी को भी दर्शन नहीं करा रही हैं ।  
श्रीकोकिलस्वामी एक ओर चुपचाप खड़े हैं । जब भीड़ छँट गयी  
तब सहचरीरूप में कोकिलस्वामी ने सखियों से सुनयनामैया से बड़ी  
आरजू-मिन्नत की, परन्तु उस समय सुनयना मैया की ममता इतनी  
प्रबल हो रही थी कि उन्होंने स्वीकार नहीं किया । फिर कोकिल  
सहचरी अंजली पुष्प लेकर प्रार्थना गीत गाने लगीं ।

जुग जुग जिए तेरी बेटिड़ी सुनयना रानी ।

पार्थिवी प्यारी तेरे घर में प्रघट भई श्री वेदवती वेद वखानी ॥  
अचल सुहाग भाग जस-भांन सुखद सीय विज्ञानी ।  
जेहिं पद-कमल सेवि मन-वच-क्रम उमा रमा ब्रह्माणी ॥  
मुखड़ो दिखाय वैदेही कुँवरि को उन्मत सुख मस्तानी ।  
जावाँकुर्बान श्रीजानकीचन्द्र जानी पै गरीबिश्रीखण्डि सहदानी ॥

गरीबि श्रीखण्डिदासी अर्थात् श्रीकोकिलसहचरी की कोकिल के  
समान स्वर में की हुई करुण संगीतमय प्रार्थना, रोमांच, स्वरभंग,  
वैवर्ण्य, तन्मयता अदि देखकर सारा रनिवास आश्चर्यचकित हो  
गया । ऐसा सनेह, ऐसी तन्मयता, ऐसी करुणा और कहाँ देखने  
को मिल सकती है । महाराज श्रीविदेह का ध्यान भंग हुआ । स्वयं  
उठकर आये । सुनयना मैया को आज्ञा दी कि गरीबिश्रीखण्डि  
दासी को लली का दर्शन करा दो । माता सुनकर बड़े प्रेम से,  
ममता से कमल की पंखड़ियों से भी कोमल अपनी लाड़ली को गोद

में लेकर गरीबिश्रीखण्डि दासी को दर्शन करानें लगीं । कोकिल सहचरी का हृदय स्नेह-

सुधा से भर गया, आँखे उमड़ आयीं । उत्सुकता इतनी बढ़ी कि माता सुनयना ने झट उठाकर अपनी लाली को उनकी गोद में दे दिया और बोली --मेरी सुकुमार लाली को सम्हालकर रखों । कहीं इसके मृदुल-मृदुल छबि छलकते अंगपर किसी के आँख की छाया न पड़ जाय !' गरीबिश्रीखण्डि दासी आनन्द-

मग्न होकर श्रीसाकेतविहारिणी सर्वश्वर हृदयेश्वरी सतीगुरु अपनी नित्य स्वामिनी को शिशु रूप में गोद में लेकर निर्निमेष निहार-निहार कर आशीर्वाद देने लगीं ।

श्रीभूनन्दिनी सदा अजर होवें, झूलें हिंडोरे मंझारी ॥

कोटि कल्प लागि कुशल मनावां यही मैं मनसा धारी ।

उमा रमा शचि सावित्रीदेवी सरस्वती सतवारी ॥

नैनपुतरि इव बेटी वैदेहीकी करनि सदा रखवारी ।

सुख सौभाग्य दिनोंदिन दूनों गरीबिश्रीखण्डि बलहारी ॥

भक्तकोकिलजी निष्काम भाव में अनन्य निष्ठा रखते थे । अपने इष्टदेव से उन्होंने कभी कुछ नहीं माँगा । वे सदा सर्वदा अपने इष्टदेव को आशीर्वाद ही देते थे । वे अपने सत्संगियों से बार-बार कहा करते थे--'कुछ भी पाने के लिये भजन मत करो; यहाँ तक कि उनका कृपाप्रसाद भी मत चाहो । यदि दान के लिये भजन करोगे तो प्रियतम के सम्मुख जानें में शर्मिन्दा होना पड़ेगा । उनके जीवन में यह दिव्य भाव सर्वत्र देखने में आता है ।

भक्तकोकिलजी लगभग एक महीने श्रीजनकपुरी एवं श्रीसीतामढ़ी में रहे । जहाँ कहीं श्रीजनकनन्दिनी का नाम पुराने सरकारी कागजों में मिल जाता उसको प्रणाम करते, उठाते, प्रेम से चूमते और सिरपर धारण करते । हमेशा भाव में मग्न रहकर श्रीअवधेश्वर-हृदयेश्वरी की बाल लीलाओं का चिन्तन करते-

सिय छबि प्यारी लागे सुषमा सलौनी ।

कर-पल्लव पद गाहि मुख मेलत पलना लड़ैती झूले लोनी ।

शुक सारिका मयूर कोयलगन बोलनि सुनि किलकोंनी ॥

उझकि उझकि रहिजाति स्वामिनी तग थकि मृदु सुर रोनी ।

मातु उछंग गोय फनि मनि ज्यों बाल-केलि दरसोनी ॥

कबहुँ निरखि ससि-किरन अजिरवर चरन घुटुरुवन गौनी ।

कबहुँ मातु पय प्याय लाय उर गाय-गाय गुनभौनी ॥

मैथिलि बाल सदाँ जिउ जगमें न्हात न बार खिसौनी ।

मुखससिकिरनि सुधा छबि पूरति पियत द्रगन भर दौनी ॥

शुक्ल पक्ष ससिकला बढ़त ज्यों त्यों नित नव छबि होनी ।

उरमिलि मान्डवि श्रुतकीरति बहिना संगमिलि केलिकरौनी ॥

पय पयोधि मिथिला कमला सी प्रगटी वैदेहि बालिका क्षौनी ।

जनकराज महाराज पिताघर कीरति विमल भिगौनी ॥

श्रीनिमिवंश उजागरि नागरि सिधिदेवी पदरज धौनी ।

गूंगेगुड़ ज्यों स्वादु सराहत गरीबि श्रीखण्डि धर मौनी ॥

० ० ० ० ०